श्यामानन्द जालान

शुतुरमुर्गकी मंच-प्रस्तुति : प्रतिक्रियाएँ

हिन्दी रंगमंचमें ऐसा बहुत कम हो पाता है कि कोई नये
नाट्य कृति पहले मंचकी कसौटीपर कसी जाये, नाटककार
प्रस्तुतीकरणका अभिन्न अंग बनाया जाये; मूल रचनाके
जाँचने-परखने और अपेक्षित परिवर्तन करनेका अवसर मिले
और फिर उसे प्रकाशित किया जाये। हर्ष है कि यह सुयो
संयोग 'शुतुरमुर्ग' को मिला।

प्रकाशनके पूर्व ही कलकत्तेकी प्रसिद्ध संस्था 'अनामिका
ने श्यामानन्द जालानके निर्देशनमें कलकत्ता और दिल्ली
'शुतुरमुर्ग' के बारह प्रदर्शन किये। बम्बईकी प्रसिद्ध संस्
'थियेटर यूनिट' ने सत्यदेव दुबेके निर्देशनमें 'शुतुरमुर्ग' के
लगभग छह प्रदर्शन किये। अब इन प्रदर्शनोंकी अनेक प्रति
क्रिया मेरे सामने है। और उन प्रतिक्रियाओंने जिन प्रश्नों
उभारा उनके उत्तरोंकी खोज मुझे सार्थक लगती है।

सबसे अधिक विवाद 'शुतुरमुर्ग' की मूल परिकल्पना
लेकर हुआ। यह कहा और लिखा गया कि नाटकके शीर्षक
का नाटककी कथावस्तुसे कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि शुत
पात्र 'राजा' को 'शुतुरमुर्ग' मान भी लें तो भी नाटक

इसे मालूम था, तब प्रेक्षकोंमें-से एक व्यक्ति उठकर पिस्तौलसे रामाकी हत्या कर देता है (यहाँ तक सहमत हुआ जा सकता है। कभी-कभी जो अनकहा होता है—वही अपेक्षित प्रभाव है। यह निश्चित अन्तका आरम्भ संकेतित करता है)। हत्याके पहले चारों मन्त्रियोंने क्रमशः जोनसन, माओ, स्टालिन, और सी० पी० आई० के मुखौटे पहन रखे हैं, और रामाकी मृत्युके साथ ही पृष्ठभूमिसे 'वन्देमातरम्'का समवेत स्वर उभरता है। इस अन्तका नाटकका कथावस्तुसे कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं। निर्देशक सत्यदेव दुबे इसे स्वीकार भी करते हैं, पर वे दर्शकोंको मुस्कान मात्र देकर घर भेजनेके पक्षमें नहीं; अस्तु यह 'टीजर'।

'अनामिका'की 'स्टाइलाइज्ड' शैली और 'थियेटर यूनिट'की 'रियलिस्टिक' शैलीने यह समस्या—सम्भावना उत्पन्न की है कि प्रस्तुतीकरणकी कौन-सी शैली 'शुतुरमुर्ग'को अधिक प्रभावोत्पादक, नाटकीय और सशक्त रुचि सम्प्रेषण देती है। पर यह प्रश्न निर्देशकोंसे सम्बन्धित है जो अपनी-अपनी क्षमताओंके अनुसार नाटकको रंग, रूप और आकार देंगे।

नाट्य आलोचकोंके एक वर्गका कथन था कि 'शुतुरमुर्ग' मात्र एक साहित्यिक नाटक है। एक दूसरे वर्गके अनुसार यह एक रंगमंचीय नाटक है। पर सच तो यह है कि [illegible] श्रेष्ठताका मूल्यांकन रंगमंचीय [illegible] सकता और न यह दोनो

शुतुरमुर्ग

शुतुरमुर्ग

[...ाशकी बत्तियाँ बुझते ही प्रकाशका केन्द्रित वृत्त मुख्य यवनिकाके ... पड़ता है। सूत्रधार मंचपर आता है। वह काले रंगका दुशाला ... है।]

...र : [दर्शकोंसे] नमस्कार और स्वागत। मेरा नाम सूत्रधार है लेकिन मैं कुछ दूसरे प्रकारका सूत्रधार हूँ। दरअसल मैं अपने ही जीवनका सूत्रधार हूँ। मैंने स्वयं ही अपने जीवनकी यवनिका उठायी, स्वयं ही मुख्य पात्रका अभिनय किया और अपने ही कौतुक सृजनका प्रेक्षक रहा। मैंने स्वयं अपने लिए घटनाओं और स्थितियोंका निर्माण किया। वक़्तकी दीवारपर मैंने अपनी, सिर्फ़ अपनी परछाइँ टाँगनेका प्रयास किया। भावनाओं और संवेगोंके ज्वार-भाटे मैंने ही उठाये और उनकी उत्तुंग तरंगोंपर ख़ुद ही सवारी की। मैं स्वयं ही अपना सर्वनियामक, अपना स्रष्टा हूँ [क्षणिक विराम] या यूँ कहिए कि था। लीजिए, मैं तो अपने जीवनका नाटक प्रस्तुत करने लगा। तनिक ठहर जाइए, मैं अपना वह परिवेश धारण कर लूँ जिसे मैं अन्तिम बार धारण किये था। [काला दुशाला हटाता है, अन्दरसे राजसी परिधान चमकने लगते हैं] और वह सोनेका शुतुरमुर्ग जो मेरा राज्य-चिह्न था। [पहनता है]

दिखता है। ऊपरकी ओर ठीक बीचोंबीच एक श्वेत सिंहासनकी जाती आयताकार सीढ़ियाँ। सिंहासनमें छत्र-के स्थानपर शुतुरमुर्गकी चोंच। राजा ध्यानसे आकर सिंहासनपर बैठता है। उसके हाथकी लकड़ी राज्य-दण्ड है। बगलमें एक मधुर आवाजका घण्टा लगा है। राजा उसे बजाता है। तुरन्त ही मंचपर पूर्ण प्रकाश आ जाता है। राजा मुँहपर वस्त्र रखकर मज़ेसे खर्राटे भरने लगता है। सभी वातावरण मंगलवाद्योंसे गूँजने लगता है। दर्शकोंकी तरफ़से देखे जानेपर ऊपरी मंचकी बायीं ओरसे रानी, दासी, भाषणमन्त्री और महामन्त्री आते हैं। ये सब एक छोटे-से जुलूसमें हैं। मंगलवाद्य बजते रहते हैं। नेपथ्यसे 'महाराजकी जय हो' के नारे लगते हैं। दासीके हाथमें एक थाल है जिसमें चन्दन, रोली इत्यादि हैं। जुलूस धीरे-धीरे सिंहासनके नीचे आकर सादर खड़ा होता है। राजाको खुर्राटे लेता देखकर सब पात्र एक दूसरेके मुँहकी ओर देखते हैं। अन्तमें भाषण-मन्त्री साहस करके आगे बढ़ता है]

भाषणमन्त्री : महाराजकी जय हो।

[राजा अब भी सो रहा है]

भाषणमन्त्री : [ज़ोरसे] महाराजकी—

सब लोग : जय हो।

[राजाका पहलेसे ज़ोरदार खुर्राटा]

भाषणमन्त्री : [और ज़ोरसे] महाराजकी—

सब लोग : जय हो।

[राजा अपनी आँखें खोलता है]

सब लोग : जय हो !

भारगमन्त्री : महाराज, अब हम आपका अभिनन्दन करना चाहेंगे ।

[राजा सिर झुका देता है—रानी मुसकराते हुए राजाके तिलक लगाती है—पृष्ठभूमिमें मंगलवाद्य]

राजा : हम आप सबके बड़े आभारी हैं कि आपने हमारा सम्मान किया, वैसे अभिनन्दन व्यक्तिका नहीं कृतित्वका होना चाहिए ।

भारगमन्त्री : महाराज, आपमें तो दोनोंका समन्वय है । अब मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप राष्ट्रके नाम सन्देश प्रसारित करें ।

राजा : [खड़ा होकर] समयोचित बात कही है आपने । [क्षणिक विराम] शुतुरमुर्गका दर्शन राष्ट्रका परम सत्य बने और उसका आचरण, राष्ट्रीय आचरण संहिता, यही हमारा सन्देश है ।

[राजा एक हाथ ऊँचा करके खड़ा हो जाता है, रानी आरती उतारती है । तभी पृष्ठभूमिसे कोलाहल धीरे-धीरे उभरता है । भीड़ नारे भी लगा रही है—'राजा मुर्दाबाद', 'शुतुरमुर्गका नाश हो' । राजा तथा मन्त्रिगण स्तम्भित रह जाते हैं]

राजा : [सक्रोध] भारगमन्त्री, हम यह क्या सुन रहे हैं ।

भारगमन्त्री : महाराज, अगर आज्ञा हो तो पता लगाकर बताऊँ ।

राजा : आज्ञा है ।

[भारगमन्त्रीका तेजीसे प्रस्थान]

रानी : महाराज, मुझे तो ऐसा लग रहा है कि राज्यके नागरिक आपका अभिनन्दन करने आये हैं ।

राजा : महारानी, क्योंकि जनताने ही हमें सत्ताका आसन दी

है। इनकी अपनी सीमाएँ हैं। यह बात दूसरी है कि इन्हें हमारी सीमाओंका ज्ञान न हो।

भाषणमन्त्री : फिर हमारी चुस्ती और मुस्तैदी भी कुछ कम नहीं, गत वर्षकी राजाज्ञाके बादसे तो हम समूहोंको भीड़में बदलनेका कार्य भी सफलताके साथ करने लगे हैं।

राजा : यह तो ठीक है लेकिन राजमहलके सामने खड़ा हुआ यह समूह—इसका अन्त क्यों नहीं हुआ ?

भाषणमन्त्री : महाराज हमारे प्रयासमें कोई ढील नहीं, लेकिन बुरा हो उस विरोधीलालका। इधर हमने समूहोंको भीड़में बदला और उधर उसने भीड़को फिर समूहमें बदल दिया। महाराज, अद्‌भुत तेज है इस विरोधीलालकी वाणीमें।

राजा : विरोधीलाल ! ऐसा लगता है यह नाम पहले भी कभी सुना है।

महामन्त्री : पढ़ा भी होगा, महाराज ! राजनैतिक व्याकरण पढ़ते समय यह नाम प्रायः आता है।

राजा : [भाषणमन्त्रीसे] विरोधीलालका पूरा परिचय ?

भाषणमन्त्री : वह इन बचे-खुचे समूहोंका नेता है महाराज, और आपकी नीतियोंका घोर शत्रु।

राजा : [साश्चर्य] हमारी नीतियोंका घोर शत्रु ? महामन्त्री, शतुरनगरीके सबसे बड़े सत्यवादीकी हैसियतसे बतलाइए—क्या हमारी कोई नीतियाँ हैं ?

महामन्त्री : शतुरनगरीके एकमात्र सत्यवादीकी हैसियतसे मैं जो कुछ कहूँगा, सच कहूँगा, पूरा सच कहूँगा और सचके सिवा कुछ न कहूँगा। महाराजकी सिर्फ एक नीति है (विराम) कि इनकी कोई नीति नहीं।

अब रहा राजमहल। तो उसकी सुरक्षाका मैंने एक नया ढंग निकाल लिया है।

[कौतुकसे] मैंने राजमहलके चारों ओर महीन बुनाईका एक रेशमी जाल लगा दिया है। अगर प्रदर्शनकारी कुछ फेंकें-फाँकेंगे तो वह उसमें उलझकर रह जायेगा और अपने राजमहलका बाल भी न बाँका होगा।

राजा : लेकिन प्रदर्शनकारियोंकी कुछ आवाजें? इनके बारेमें क्या सोचा है?

रक्षामन्त्री : [मुसकाकर] यही तो सबसे असम्भव कार्य है जिसे हम सम्भव करने जा रहे हैं। हमारे विशेषज्ञ बराबर यह सोच रहे हैं कि विरोधियोंकी आवाज कैसे बन्द की जाये?

महामन्त्री : महाराज, विरोधकी साफ़-सुथरी आवाज बन्द करनेका प्रमाण मत कीजिए: फिर तो आप सत्यका गला ही घोट देंगे।

राजा : [मुसकाकर] हम सिर्फ असत्यका गला घोटेंगे महामन्त्री। दरअसल हमें असण्ड शान्ति चाहिए ताकि हम एकाग्रचित्त होकर अपने परम सत्यकी स्थापना कर सकें और हमारे परम सत्यका प्रतीक शुतुरमुर्ग स्थापित हो सके। सत्यमेव जयते!

[राजा शान्तिसे अपने सिंहासनपर बैठ जाता है। तभी बाहरसे क्रुद्ध भीड़का कोलाहल पुनः उभरकर विलीन होता है।]

भाषणमन्त्री : [उत्तेजित] अब यह विरोधीलाल एक समस्या बनता जा रहा है।

राजा : [शान्तिसे] समस्याएँ खुद ही अपना समाधान होती हैं भाषणमन्त्री।

रक्षामन्त्री : लेकिन महाराज, यह विरोधीलाल एक विशेष समस्या है।

[धुम्रधूमसे कुछ सीढ़का शोर उभरकर विलीन होता है]
और इसीलिए हम विरोधीलालसे भयभीत नहीं। सच तो यह है कि जबतक हमारा सोनेका शुतुरमुर्ग बनकर पूरा नहीं हो जाता और उसपर स्वर्णछत्रकी स्थापना नहीं हो जाती—तबतक हम किसीसे भयभीत नहीं।

[महारानीका तेज़ीसे प्रवेश। उनके हाथमें एक दर्पण है]

नी : पर मैं भयभीत हूँ।

जा : महारानी!

नी : मैं सचमुच भयभीत हूँ।

जा : क्या हुआ महारानी?

नी : मैं अपने कक्षमें दर्पणके सामने अपने केश सँवार रही थी। तभी एक पत्थरका टुकड़ा दनदनाता हुआ आकर सीधा मेरे दर्पणको लगा और यह चारों कोणोंसे टूट गया।

जा : रक्षामन्त्री, आप तो कह रहे थे कि आपके सुरक्षा-प्रबन्ध अभेद्य हैं।

क्षामन्त्री : क्षमा करें महाराज, कहीं कोई त्रुटि रह गयी होगी।

नी : लेकिन महाराज, अगर रक्षामन्त्रीजीकी त्रुटिसे मेरा अंग भंग हो जाता तो क्या होता? इन्हें दण्ड मिलना चाहिए।

क्षामन्त्री : [भयभीत] महारानी!

जा : हमें दुःख है महारानी कि हम आपसे सहमत नहीं।

नी : महाराज!

जा : रक्षामन्त्रीको तो पुरस्कार मिलना चाहिए। हम तो रक्षामन्त्रीके आभारी हैं कि इन्होंने हमारी सुरक्षा व्यवस्थाकी एक त्रुटि हमें इस प्रकार दिखलाई। कमसे कम अब हम उन्हें दूर तो कर सकेंगे। हम जानते हैं कि इसमें व्यय होगा, लेकिन वह हमें स्वीकार है।

[रानीका धीरे-धीरे प्रस्थान। रानी टूटे दर्पणको अपने सिरपर दोनों हाथोंसे सँभाले है। सभी मन्त्री आदरसे झुकते हैं। क्षण-भर बाद दूसरी ओरसे दासीका प्रवेश। उसके हाथमें एक तीर है।]

दासी : महाराजकी जय हो। अभी-अभी यह तीर राजकीय कक्षके अन्दर आकर गिरा है।

[राजा तीर लेता है। दासी सादर अन्दर चली जाती है]

राजा : [तीरमें लगे पत्रको देखकर] यह तो कोई पत्र जान पड़ता है। महामन्त्रीजी, देखिए तो इसमें क्या है?

[राजा पत्र देखकर सिंहासनपर जा बैठता है। सभी मन्त्री निकट आते हैं।]

महामन्त्री : [पढ़कर] विरोधीलालका पत्र है। आपसे मिलना चाहता है।

राजा : पर हम उससे नहीं मिलना चाहते।

भाषणमन्त्री : बिलकुल ठीक! महाराजका निर्णय अन्तिम है।

रक्षामन्त्री : विरोधीलालसे मिलना तो दूर, हमें तो उसकी कल्पनासे भी घृणा है।

महामन्त्री : हम जिसे घृणा कहते हैं, वस्तुतः वह भय है।

राजा : तो आप यह कहना चाहते हैं कि हम विरोधीलालसे भयभीत हैं।

महामन्त्री : हाँ महाराज, आप भयभीत हैं। तभी तो आप सत्यसे साक्षात्कार नहीं करना चाहते।

राजा : महामन्त्री!

महामन्त्री : और इसीलिए आपको विरोधीलालसे ज़रूर मिलना चाहिए।

राजा : क्यों?

महामन्त्री : [पत्र पढ़कर] विरोधीमात्मका दूसरा पत्र । वह बातों
तुरन्त मिलना चाहता है ।

राजा : [मुसकराकर] देखता हूँ विरोधीमात्मका धैर्य समाप्त हो
रहा है, यह शुभ चिह्न है । अस्तु, तबतक हम विश्राम
करें । अब पहली बात तो हम यह जानना चाहेंगे कि
हमारे शुतुरमुर्गका निर्माण-कार्य पूरा हुआ या नहीं ?

भाषणमन्त्री : शुतुरमुर्गका निर्माण-कार्य पूरा हो चुका है, महाराज
बल्कि अबतक तो उसपर स्वर्णछत्र भी लग चुका होगा

राजा : [प्रसन्न] स्वर्णछत्र भी लग चुका है ! हम अपने विकास
मन्त्रीकी कार्यतत्परताके आभारी हैं । भाषणमन्त्री ! उन
इसी क्षण बुलवाइए, हम उन्हें राष्ट्रीय सम्मान देना चाहेंगे

भाषणमन्त्री : लेकिन महाराज वे अस्वस्थ हैं ।

राजा : अस्वस्थ हैं ?

महामन्त्री : घोटक सरकोंकी अधिकतासे उन्हें ज्वर हो गया
महाराज !

भाषणमन्त्री : शुतुरमुर्गको बनवाने और उसपर स्वर्णछत्रकी स्थापना
कामने उन्हें बहुत व्यस्त रखा । वे कन्दमूल फल खाक
रात-दिन काम करते रहे । अधिक फल खा लेनेसे उन
भयंकर ज्वर हो गया ।

राजा : पर हमारे शुतुरमुर्गपर स्वर्णछत्रकी स्थापना तो हो गय
है न ?

भाषणमन्त्री : इस बातका निश्चित समाचार हमें मिला है ।

राजा : [भावावेशमें] तो इसका अर्थ यह हुआ कि हम शुतुरमुर्ग
उद्घाटनका प्रबन्ध जल्दीसे करें । आह ! कितना मह
होगा वह क्षण जब हमारे शुतुरमुर्गका अनावरण होगा
सज्जनो, शुतुरमुर्गके उद्घाटनका प्रबन्ध हम परम सत्वर

राजा : आप वचन भी न रहे।

रक्षामन्त्री : और मैं ?

राजा : आप भी। [महामन्त्रीसे] और आप भी।

महामन्त्री : मैं और रक्षामन्त्री प्रणाम करते हैं महाराज, लेकिन वचन नहीं दे सकता।

राजा : आप वचन न दें। फिर इच्छा करें कि आप यहाँ कोई बात हम आपसे बोलनेका संकेत करें।

[पृष्ठभूमिमें विरोधीलालकी आवाज सुनाई पड़ने लगती है। राजा तुरन्त गम्भीर मुद्रा बनाकर सिंहासनपर बैठ जाता है, तीनों मन्त्री सिंहासनके पीछे प्रतिमाओंकी तरह खड़े हो जाते हैं। विरोधीलाल नारे लगा रहा है: राजा—मुरदाबाद, सुन्दरनगरीका नाश हो। विरोधीलालका ऐसे प्रवेश मानो वह भागता आ रहा हो।]

विरोधीलाल : [गरजकर] सिंहासनपर बैठे हुए व्यक्तिसे मैं एक प्रश्न पूछ सकता हूँ ? आप हो हैं—सुन्दरनगरीके महाराज ?

राजा : [शान्तिसे] हाँ, हम हैं सुन्दरनगरीके महाराज, और अभी सिंहासनपर बैठे हैं।

विरोधीलाल : [व्यंग्यसे] मैंने तो सुना था कि आप कुर्सीपर बैठते हैं और आपके योग्य मन्त्री सिंहासनपर !

राजा : आपने कई बातें मिथ्या सुनी हैं। उनकी चर्चा हम आगे करेंगे। पहले इनका परिचय प्राप्त कीजिए। ये हैं परम सत्यवादी महामन्त्री, ये भाषणमन्त्री और ये रक्षामन्त्री।

[तीनों मन्त्री बारी-बारीसे अभिवादन करते हैं।]

विरोधीलाल : हूँ ! तो यह है वह मन्त्रिमण्डल जो सुन्दरनगरीका शासन करता है।

बन्द, दूसरा, अन्याय एक हजार वर्ष तक रहे तो उसे रहने दो, अन्तमें तो सत्य न्याय और प्रेमकी विजय होती ही। [अनुयायी] तथास्तु अस्तु—अर्थात् एक हजार वर्ष और।

राजा : हम आपकी बातोंसे उत्तेजित नहीं होंगे।

विरोधीलाल : आप इन बातोंसे उत्तेजित नहीं होंगे, यही तो हमारे देश-का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।

राजा : हमारी शान्ति और संयम, हमारी नैतिकता प्रतीक है, आप उसे कोई भी नाम दें।

विरोधीलाल : मैं उसे नाम दूँगा? यह नाम तो स्वयं आपने अपनी कानूनी करतूतोंसे बनाया है। हर वह शब्द जो नीचताओंका पर्यायवाची है, आपका ही नाम है।

मानवमन्त्री : विरोधीलालजी, महाराजको धाराप्रवाहिक गालियाँ देना आप-जैसे पढ़े-लिखे व्यक्तिको शोभा नहीं देता।

रक्षामन्त्री : इन सब अशिष्टताओंका परिणाम भयंकर हो सकता है। [महामन्त्री चुप हैं]

राजा : महामन्त्री, आपका कथन?

महामन्त्री : महाराज, हर वह कथन नैतिक कथन है जो दूसरोंको प्रभावित और परिवर्तित कर सके।

राजा : हम आपका आशय नहीं समझे।

महामन्त्री : मेरे विचारसे आप विरोधीलालकी इन बातोंको नहीं सुन रहे थे जो अभी इन्होंने कहीं। आप उन बातोंको सुन रहे थे जो विरोधीलालने अभी नहीं कही हैं। मेरा सुझाव है कि एकान्तमें आप दोनों सार्थक समझौतेकी तलाश करें। [तीनों मन्त्री जाते हैं]

राजा : [सिंहासनसे नीचे उतरकर] इस एकान्तका लाभ उठाकर

आप आगे हो चुके हैं ? यदि आगे वह पुष्पमालाएँ, अभिनन्दन-मंच, श्रोता लोग लिये जायें ? अच्छी तरह सोच लीजिए इन बातोंको और फिर कह दीजिए कि मेरे प्रस्तावको ठुकराकर आप कष्टोंके चक्रव्यूहमें न फँसेंगे ? [विराम] विरोधीलालजी, मानव जीवनके सब महान् परिवर्तन समझौतेसे सम्भव हुए हैं . विरोधीलालजी, हमें शान्ति चाहिए—अखण्ड शान्ति—ताकि हम अपने शुतुरमुर्गकी स्थापना कर सकें।

विरोधीलाल : शुतुरमुर्ग ! आह ! कितना प्यारा पक्षी है ! जब नग्न सत्य उसे चारों ओरसे घेर लेते हैं और वह भाग नहीं पाता तो आँखों समेत वह अपनी चोंच रेतमें दुबो देता है और पलायनकी उस सम्पूर्ण अनुभूतिमें यह कल्पना करता है कि उसे कोई नहीं देख रहा है ! कोई नहीं जान रहा है, कोई नहीं समझ रहा है और वह सुरक्षित है !

राजा : लेकिन सचेत शुतुरमुर्ग अच्छी तरह जानता है कि उसे सब देख रहे हैं, सब समझ रहे हैं और वह सुरक्षित नहीं है।

विरोधीलाल : फिर वह क्या करता है ?

राजा : निर्माण और स्वर्णछत्रकी स्थापना।

न हुई हो तो ?

स्वर्णछत्रकी स्थापना

ह रहे हैं विरोधीलालजी ?

हैं। शुतुरमुर्गपर सुनहरो

सारा घन

[illegible]

राजा [illegible]

[[illegible]]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[[illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

विश्वेश्वर [[illegible]] [illegible]

राजा [[illegible]] [illegible]

[illegible]

विरोधीलाल : [हकलाकर] महाराज···आप महाराज···आप···वह पहले व्यक्ति हैं जिनने मेरी प्रतिभाको पहचाना है। हाँ··· महाराज···मुझे शुतुरनगरीका विकासमन्त्री बनना स्वीकार है। एक बार नहीं···मुझे मन्त्री बनना हज़ार बार स्वीकार है।

[राजाके चरणोंमें] महाराजकी जय हो।

[राजा सिंहासनकी ओर मुड़ता है, विरोधीलाल पीछे-पीछे है]

विरोधीलाल : [उत्तेजित] मैं···मैं वचन देता हूँ महाराज कि शुतुरमुर्ग-पर स्वर्णछत्रकी स्थापना पुनः होगी। अल्प समय और अल्प धनमें जो कार्य आपके भूतपूर्व विकासमन्त्री न कर पाये···वह मैं करूँगा···वह मैं करूँगा महाराज!

राजा : [सिंहासनपर बैठकर मुसकराते हुए] हमें आपकी क्षमतापर विश्वास है विरोधीलालजी।

विरोधीलाल : अब एक कृपा और कीजिए। आजसे मुझे विरोधीलाल न कहें।

राजा : [प्रसन्नतासे] हमें स्वीकार है, हम आजसे आपको एक नाम देंगे— 'सुबोधीलाल'।

[विरोधीलाल राजाके चरणोंमें झुकता है। राजा दाहिना हाथ उठाकर आशीर्वाद देता है—सत्यमेव जयते। फिर घण्टा बजाता है। तीनों मन्त्रियोंका प्रवेश]

राजा : [प्रसन्न] सज्जनो, शुतुरनगरीके नये विकासमन्त्रीसे मिलिए।

भाषणमन्त्री : [अभिवादन] बधाई है।

रक्षामन्त्री : [अभिवादन] बधाई है।

: बधाई है सुबोधीलालजीको।

[illegible] [illegible] है।

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]
[[illegible]]
[illegible]।

[illegible] [illegible] है।

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] है।

[illegible] [illegible]। [illegible]
[illegible]।

[illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] हैं कि [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] कर लिया है। [illegible]।
[[illegible]]

महामन्त्री : धर्म-संकट और उच्च अभिलाषाएँ, इन दोनोंका कोई मेल नहीं है, घुसीघोलालजी। एकका अन्त ही दूसरेका आरम्भ है।

विरोधीलाल : मैं इन परिभाषाओंको लेकर निश्चित नहीं हूँ महामन्त्री। न ही मुझे उत्तरोंका प्रश्न व्यथित किये है। मेरी समस्या इन सब बातोंके सरलीकरणकी है। मामूलीराम इस परिवर्तनको सहज रूपसे स्वीकार करे यही मेरी समस्या है।

[मामूलीरामका प्रवेश]

मामूलीराम : [सभय] मैं · मैं अन्दर आ जाऊँ।

विरोधीलाल : आओ मामूलीराम।

[मामूलीराम मन्त्रियोंको सभय देखता है—सीधा विरोधीलालके पास आता है।]

मामूलीराम : आप··आपने तो बड़ी देर लगा दी विरोधीलालजी। बाहर सब लोग आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। राजासे कुछ बातचीत हुई? क्या निर्णय हुआ?

विरोधीलाल : [अचानक] हमारी जीत हुई है मामूलीराम?

मामूलीराम : [प्रसन्नतासे] सच?

विरोधीलाल : हाँ····महाराजने मेरी शर्त मान ली है।

मामूलीराम : [प्रसन्नतासे] शर्त मान ली है! हे भगवान्, बड़ा उपकार किया तुमने!

विरोधीलाल : अब एक-एक करके सब कष्ट दूर हो जायेंगे।

मामूलीराम : भरपेट भोजन मिलेगा?

विरोधीलाल : मिलेगा····

मामूलीराम : रहनेको मकान?

विरोधीलाल : वह भी—।

मामूलीराम : पहननेको कपड़े?

विरोधीलाल : [illegible] सबके
[illegible]

मामूलीराम : [सहसा जागकर, [illegible]]
[विश्राम पुनः [illegible]]

विरोधीलाल : अब तुम्हें जाना चाहिए [illegible] रहे हैं।

मामूलीराम : ठीक है, अब मैं जाता हूँ। [मुड़कर] पर मैं जनता [illegible]
सन्देश कहूँ

विरोधीलाल : सबको सब-कुछ मिले।—और—

मामूलीराम : [बाधकर] सबको और दूर।

विरोधीलाल : मामूलीराम अब तुम्हें अपना नारा सुधारना चाहिए।
सबको जीत हुई नगर। मानवमेव जयते।
[प्रयाण] मानवमेव जयते जयते।

मामूलीराम : लेकिन यह शब्द बहुत बड़ा है और कठिन भी।

विरोधीलाल : बड़े शब्दोंका मतलब देरसे समझमें आता है मामूलीराम, पर एक बार समझमें आ जाये तो देर तक रहता है। समझे? तो क्या कहोगे?

मामूलीराम : सबको सब-कुछ मिलेगा और सत्यमेव जयते—[प्रसन्नता-से चीखता है] सबको सब कुछ मिलेगा और सत्यमेव जयते।

[यहाँ चिल्लाते हुए मामूलीरामका प्रस्थान]

[विरोधीलाल मन्त्रियोंकी ओर देखता है, महामन्त्रीको छोड़कर सब खुलकर हँसते हैं। अन्दरसे दासीका प्रवेश]

दासी : [ऊँचे स्वरमें] सावधान'' सावधान'''शुतुरनगरीके महाराज पधार रहे हैं।

[सभी मन्त्री सादर खड़े होते हैं। अन्दरसे राजाका प्रवेश, सभी मन्त्री आदरसे सिर झुकाते हैं, राजा सिंहासनपर जा बैठता है]

राजा : शुतुरनगरीके संविधानके अनुसार हम घोषणा करते हैं कि सुबोधीलालजीका शपथ-समारोह तुरन्त सम्पन्न किया जाय। महामन्त्रीजी!

महामन्त्री : महाराज।

राजा : आप सुबोधीलालजीको शपथ-समारोहके रीति-रिवाज समझायें। रक्षामन्त्रीजी!

रक्षामन्त्री : महाराज!

राजा : आप सुबोधीलालजीको शपथ-समारोहके वस्त्र पहनाकर लायें।

रक्षामन्त्री : जो आज्ञा महाराज। आइए, सुबोधीलालजी।

[महामन्त्री और रक्षामन्त्रीके बीचमें होकर विरोधीलाल अन्दर आते हैं।]

[रानी मुसकराते हुए हाथोंमें तिलकका थाल लेकर विरोधीलालकी ओर जाती हैं। रानी थालके ऊपर ही मस्तकपर तिलक लगाती हैं, फिर तीन बार आरती उतारती हैं। मंगलवाद्य बजते हैं।]

राजा : हम, शुतुरनगरीके महाराज—यह घोषणा करते हैं कि परम सत्यवादी महामन्त्री शपथ-समारोह सम्पन्न करायें।

महामन्त्री : [विरोधीलालके पास आकर] शुतुरनगरीके नये विकास-मन्त्री सुबोधीलालजी—मैं आपका स्वागत करता हूँ। [फिर ऊँचे स्वरमें] शुतुरनगरीके परम सत्यवादीकी हैसियतसे मैं जो कुछ कहूँगा सच कहूँगा, पूरा सच कहूँगा और सचके सिवा कुछ न कहूँगा। अब शुतुरनगरीके महाराजकी आज्ञानुसार नये विकासमन्त्री श्री सुबोधीलाल शपथ लेंगे। [विरोधीलालसे] सुबोधीलालजी अब एक-एक शब्द दोहराइए। मैं विरोधीलाल उर्फ़ सुबोधीलाल—

विरोधीलाल : मैं विरोधीलाल उर्फ़ सुबोधीलाल।

महामन्त्री : कुलदेवता शुतुरमुर्गको साक्षी करके यह शपथ लेता हूँ—

विरोधीलाल : कुलदेवता शुतुरमुर्गको साक्षी करके यह शपथ लेता हूँ—

महामन्त्री : कि मैं आधा वचनसे और आधा कर्मसे अर्थात् महाराजका पूरा अनुयायी रहूँगा।

विरोधीलाल : लेकिन महामन्त्रीजी, मैं तो मन, वचन और कर्म तीनोंसे महाराजका अनुयायी रहना चाहता हूँ।

महामन्त्री : [क्रोधित] सुबोधीलाल—यह क्या अशुभ बात कहते हैं। क्या मैंने आपको अन्दर यह नहीं समझाया था कि केवल वचनकी सौगन्ध लेनी है। कर्म तो आपकी इच्छापर होगा। और मनका तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता। यदि

मामूलीराम : [दुखी स्वर] किरोड़ीमलजी, आपके एहसानको हम कभी नहीं भूल सकते। आप—आप सचमुच महान् हैं। आपने हम लोगोंके लिए क्या नहीं किया – और अब आप हम लोगोंको छोड़ रहे हैं ताकि हमें आराम मिल सके।

किरोड़ीमल : [illegible] मामूलीराम—यह किसीसे कहना नहीं कि [illegible] आपसे [illegible] नहीं। लोगोंके दुखी होनेको अपने ऊपर लेनेका मजा आता है। [illegible] कि मैं आदमी हूँ—[illegible] हूँ—[illegible] हूँ?

मामूलीराम : [गर्व स्वरमें] नहीं कहूँगा—बिल्कुल नहीं कहूँगा।

राजा : स्वागत समारोह समाप्त हुआ। [illegible] महामन्त्रीको अब [illegible] पूजनके लिए अब किरोड़ीमलजीको आदरसे बोलें।

महामन्त्री : चलिए किरोड़ीमलजी।

[महामन्त्री आगे बढ़कर ताला खोल देता है। किरोड़ीमल अन्दर [illegible] जाता है। आगे-आगे किरोड़ीमल पीछे-पीछे [illegible] महामन्त्री—उसके पीछे राजा और रानी हैं।]

मामूलीराम : तो फिर मैं कब जाऊँ—किरोड़ीमलजी?

: मामूलीराम! अगर तुमने ज्यादा अक्लमन्दी दिखलायी तो हम तुम्हें राजमहलसे बाहर फेंक देंगे।

हाँ [illegible] करेंगे।

[illegible] ऐसे दीजिए कि फिर कब जाऊँ?

[illegible] गेमें बाहर निकलता

मामूलीराम : धोखा दिया है ? हे भगवान् !

राजा : तुमने तो स्वयं देखा वह शुतुरमुर्गका नया विभागमन्त्री हो गया है।

मामूलीराम : जब आप कह रहे हैं तो जरूर सच होगा लेकिन महाराज आपने इतने धोखेबाज आदमीको मन्त्री बनाया ही क्यों ?

राजा : यह राज-काजकी बातें हैं मामूलीराम। कभी-कभी बाध्य होकर हमें वह सब करना पड़ता है जो हम नहीं चाहते।

मामूलीराम : लेकिन वह सब करना तो आपको अच्छा लगता है, जो आप चाहते हैं।

राजा : हम वही सब तो करते हैं जो हमें अच्छा लगता है।

मामूलीराम : तो फिर बताइए, हमारी माँगें कब पूरी होंगी ?

राजा : क्या तुम्हारी कोई माँगें हैं ?

मामूलीराम : हाँ महाराज, और आप उन्हें सरलतासे पूरा कर सकते हैं।

राजा : हमें उनके बारेमें बतलाओ।

मामूलीराम : सबसे पहली बात तो यह कि हमें दो जूनका भोजन चाहिए। फिर तन ढँकनेको कपड़ा और रहनेको छोटा-सा घर। बस।

राजा : यह सब हम तुम्हें दे सकते हैं।

मामूलीराम : [प्रसन्नतासे] महाराज ?

राजा : हाँ, मामूलीराम, यह सब हम तुम्हें दे सकते हैं। लेकिन तुम्हें भीड़को समझाना होगा। उसे हमारे झण्डेके नीचे लाना होगा। जबतक हमारा सोनेका शुतुरमुर्ग पूरा नहीं हो जाता—तबतक भीड़को शान्त रखना होगा।

मामूलीराम : फिर सबको सब-कुछ मिलेगा ?

राजा : हाँ मामूलीराम ! पर सबसे पहले तुम्हें सब कुछ मिलेगा ! हमारे शुतुरमुर्गके पूरा होनेसे पहले तुम्हें और बादमें भीड़को।

दमन हम किये नहीं । हम इस महान् [illegible] तुम्हारे
व्यक्तित्वका उपयोग करना चाहते हैं । अब हम अपनी
बात अन्तिम बार कहेंगे । जब भीड़ शान्त रहेगी तब
शुतुरमुर्ग पूरा होगा । जब शुतुरमुर्ग पूरा होगा तब माँगें
पूरी होंगी ।

मामूलीराम : लेकिन महाराज अगर भीड़ने मेरी बात न मानी तो ?

राजा : हाँ, यह प्रश्न भी बड़ा सार्थक है । यदि भीड़ने तुम्हारी बात न मानी तो ? [राजा कुछ सोचते हुए सिंहासन तक आता है, फिर अनायास ही घण्टा बजाता है]

[अचानक पृष्ठभूमिसे ऊँचे स्वरमें रणभेरी बजती है]

मामूलीराम : यह रणभेरी क्यों बज रही है ?

राजा : [गम्भीरतासे] ऐसा लगता है कि शुतुरनगरीपर कोई बहुत बड़ा संकट आया है ।

मामूलीराम : [भयभीत] बहुत बड़ा संकट आया है ?

राजा : हाँ—मामूलीराम । यह रणभेरी तभी बजती है जब शुतुर-नगरीपर कोई महान् संकट आता है ।

[अन्दरसे रणभेरी बजाते हुए भाषणमन्त्रीका प्रवेश । यह सामूहिक एकता प्रदर्शित करनेवाला एक मुखौटा लगाये है]

भाषणमन्त्री : [घोषणा] सावधान-सावधान—शुतुरनगरीपर भयानक संकट आया है ।

मामूलीराम : आप कौन हैं श्रीमन्त ?

राजा : ये भाषणमन्त्री हैं ।

मामूलीराम : लेकिन ये मुखौटा क्यों लगाये हैं ?

राजा : यह मुखौटा राष्ट्रके दृढ़ संकल्प और सामूहिक एकताका प्रतीक है । क्या समाचार है भाषणमन्त्री ?

[illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible]

मुकाबला करनेके लिए सारा राष्ट्र एक व्यक्तिकी तरह खड़ा हो। आगे एक लम्बा और कटु संघर्ष है। हम अपनी प्रजाको कष्ट-आँसू और पीड़ाके अलावा और कुछ भी देनेका वचन नहीं करते। सावधान-सावधान—!

[यही कहते हुए भाषणमन्त्रीका प्रस्थान। धीरे-धीरे उसका स्वर पृष्ठभूमिमें विलीन होने लगता है।]

राजा : अगर शुतुरनगरी है तो हम हैं, शुतुरनगरी न रही तो हम भी न रहेंगे।

[रक्षामन्त्रीका प्रवेश। वह सामूहिक क्रोध प्रकट करनेवाला एक मुखौटा लगाये तथा युद्ध वेशमें है।]

रक्षामन्त्री : शुतुरनगरी सदैव रहेगी महाराज।

मामूलीराम : आप कौन हैं श्रीमन्त ?

राजा : ये रक्षामन्त्री हैं मामूलीराम। यह मुखौटा हमारे राष्ट्रके सामूहिक क्रोधका प्रतीक है। क्या समाचार है रक्षामन्त्री ?

रक्षामन्त्री : महाराजकी जय हो। आक्रमणकारियोंका सामना करनेके लिए सभी प्रबन्ध हो चुके हैं। सारा देश एक अभेद्य दुर्गकी तरह अपने संकल्पोंपर दृढ़ है। आज सारी शुतुरनगरी क्रोधित है महाराज। यदि शत्रुने आक्रमण करनेका प्रयास किया तो उसे हमारे सामूहिक क्रोधकी ज्वालाएँ भस्म कर देंगी। सत्यमेव जयते।

[रक्षामन्त्रीका प्रस्थान। क्षणिक विराम]

मामूलीराम : अब हमारी माँगोंका क्या होगा, महाराज ?

राजा : [क्रोधित] तुम्हें शर्म आनी चाहिए मामूलीराम। इतना भयंकर संकट और तुम्हें अपनी इन तुच्छ माँगोंकी चिन्ता है?

मामूलीराम : [सभय] तो फिर मैं जाता हूँ महाराज। फिर कभी आऊँगा।

... ... और नम अंतर बना।

... पुनः अभिवादन करता है। राजा उसे देखा हाथ उठाकर आशीर्वाद देता है। मातुलराजके चेहरेपर ऐसे भाव हैं मानो वह जागृत हो रहा है। एक नये आत्मविश्वास और दृढ़ताके साथ मातुलराजका धीरे धीरे प्रस्थान। राजा उसे मुसकराता हुआ देखता रहता है।]

[दासका प्रवेश]

दासी : महाराजकी जय हो।

राजा : क्या समाचार है दासी ?

दासी : महाराज राजपुरोहितजी पधारे हैं।

राजा : राजपुरोहितजी पधारे हैं ? कुशल तो है ?

दासी : राजपुरोहितजी आपके जन्मोत्सवमें भाग लेने आये

राजा : हमारा जन्मोत्सव ?

दासी : [कमजोर आवाज़] हाँ, महाराज! महारानीने एक बहुत बड़े भोजका आयोजन किया है। आप तो जैसे सब-कुछ भूल ही गये।

राजा : [मुसकराकर] राज-काजकी झंझटोंमें हम बहुत-सी महत्त्वपूर्ण बातें भूल जाते हैं। क्या-क्या आयोजन है?

दासी : सबसे पहले राजपुरोहितजीका आशीर्वचन, फिर चुनी हुई देवदासियोंका नृत्य और गायन और अन्तमें विशाल भोज; इस उत्सवका विशेष आकर्षण एक मंगल-गान है महाराज, जिसे स्वयं महारानीने लिखा है।

राजा : स्वयं महारानीने लिखा है?

दासी : [एक स्वर्णपत्र देकर] यह देखिए महाराज—स्वर्णपत्रमें वह गान अंकित है, भोजके पश्चात् यह स्वर्णपत्र प्रत्येक अतिथिको उपहारमें दिया जायेगा।

[राजा स्वर्णपत्र पढ़ रहा है]

दासी : शुनुरनगरीकी चुनी हुई गायिकाएँ इसका अभ्यास कर रही हैं। उद्यानमें सबको आपकी प्रतीक्षा है।

राजा : [स्वर्णपत्र पढ़कर] ओ युगपुरुष! स्वीकार करो यह वन्दन।
थालाञ्जियाँ लिये खड़ी हैं रोली और चन्दन॥
तुम जियो हजारों वर्ष, तुम रहो हजारों वर्ष।
युगों तक होता रहे तुम्हारा अभिनन्दन॥
[प्रसन्नतासे] काव्य…शुद्ध काव्य। हमें प्रसन्नता है कि महारानीने शुनुरनगरीका कलामन्त्री पद स्वीकार किया। तुम कविता समझती हो दासी?

दासी : नहीं महाराज।

राजा : आजके पहले हम भी नहीं समझते थे। पर तुम्हारी महारानीने हमें काव्यकी महान् शक्तिसे परिचित कराया है।

महाराजकी जय हो ! शुभ समाचार है महाराज !

राजा : शुभ समाचार ?

भाषणमन्त्री : हाँ महाराज—जैसे ही राज-द्वारपर जाकर मैंने आपका सन्देश प्रसारित किया वैसे ही मानो दैवी चमत्कार हो गया हो। भीड़ चुपचाप अपने घर चली गयी।

राजा : हम प्रसन्न हैं भाषणमन्त्री। शुतुरनगरीके निवासी अपने महान् कष्टोंको महानताके साथ स्वीकार कर रहे हैं—यह शुभ-चिह्न है।

भाषणमन्त्री : और महाराज एक अशुभ समाचार है।

राजा : अशुभ समाचार ?

भाषणमन्त्री : हाँ महाराज जब भीड़ राजद्वारसे वापस चली गयी तो एक विचित्र बात पायी गयी ?

राजा : विचित्र बात ?

भाषणमन्त्री : लगभग दस नागरिक मरे पड़े थे। द्वारपालका कहना है कि वे भूख लगनेसे मर गये।

राजा : भूख लगनेसे मर गये ? परन्तु वे अपने घर भोजन करने भी तो जा सकते थे।

भाषणमन्त्री : महाराज द्वारपाल कहता है कि उनका कोई घर ही नहीं है।

राजा : [क्रुद्ध] तो फिर वे कहीं औरसे भोजन कर आते और पुनः राजद्वारके सामने खड़े हो जाते।

भाषणमन्त्री : महाराज—द्वारपाल कहता है कि शुतुरनगरीमें भोजन समाप्त हो गया है।

राजा : हमें दुःख है भाषणमन्त्रीजी कि अब आप द्वारपालोंकी बात-पर काफी विश्वास करने लगे हैं। हम तो यह जानना चाहते थे कि स्वयं आप क्या कहते हैं ?

भाषणमन्त्री . हमारे पास तो अभी पर्याप्त भाषण सामग्री है महाराज!

राजा हम आपसे सहमत हैं। हमें ऐसा लगता है कि कुछ अज्ञात दुर्बुद्धियोंने आत्म-महत्ता की है और अब भूखने मरनेका यह नाटक प्रचारित किया जा रहा है। भाषणमन्त्री—हम चाहते हैं कि आप तुरन्त जनसाधारणमें इस राष्ट्रीय षडयन्त्रका भण्डाफोड़ करें।

[अन्दरसे विरोधीलालका प्रवेश]

विरोधीलाल महाराजकी जय हो।

राजा आइए सुबोधीलालजी।

विरोधीलाल . अपने जन्मदिवसपर हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिए महाराज।

राजा शुभकामनाओंके लिए हम आभारी हैं सुबोधीलालजी। लेकिन हमें भय है कि हम अपने जन्मोत्सवमें भाग न ले सकेंगे।

विरोधीलाल क्यों महाराज?

राजा अभी कुछ अशुभ संकेत हमें मिले, शुतुरनगरके निवासी क्रुद्ध हैं। राष्ट्रकी सीमाओंपर शत्रु-दल सक्रिय है। ऐसी दशामें यह समारोह हमें उचित नहीं जान पड़ता।

भाषणमन्त्री परन्तु महाराज महारानीको जब यह मालूम होगा तो वे बहुत दुखी होंगी। आखिर तो उन्होंने कितने श्रमसे उत्सवकी तैयारी की है।

राजा हमें महारानीके दुखकी भी चिन्ता है। हम यह सोच रहे हैं कि महारानीद्वारा आयोजित किसी कार्यक्रममें हम भाग न लें—पर उन्हें दुखका अवसर न दें।

भाषणमन्त्री यही उचित रहेगा महाराज।

राजा : ठीक है—आप यह प्रसारित कर दीजिए कि राष्ट्रीय संकटको देखते हुए महाराजने अपने जन्मदिनके समारोहमें भाग लेनेसे इनकार कर दिया है।

भाषणमन्त्री : सूचनाएँ प्रसारित होनेमें शीघ्रता हो—इस दृष्टिसे मैंने प्रसारणकर्ताओंका जाल बिछा दिया है महाराज—अब इसी क्षणसे यह सब हो सकेगा [ऊँचे स्वरमें] राष्ट्रीय संकटको देखते हुए महाराजने अपने जन्मोत्सवमें भाग लेनेसे इनकार कर दिया है। [तुरन्त ही पृष्ठभूमिमें एक पुरुष कण्ठ यही दोहराता है—फिर कुछ दूरीसे दूसरा—फिर तीसरा]

[अन्तर्मुख-सा] अब हम केवल उस दिन समारोहमें भाग लेंगे जिस दिन शुतुरमुर्गका उद्घाटन होगा।

विरोधीलाल : शुतुरमुर्गका उद्घाटन होनेमें अब देर नहीं महाराज। मैं स्वर्णछत्रकी स्थापना करने जा रहा हूँ। [एक राजकीय आज्ञापत्र निकालकर] आप यहाँ हस्ताक्षर कर दीजिए महाराज।

राजा : [पढ़कर] परन्तु दो सहस्र स्वर्णमुद्राएँ तो बहुत अधिक हैं।

विरोधीलाल : पिछले विकासमन्त्रीने चार सहस्र-मुद्राओंकी स्वीकृति ली थी, यह तो केवल उसका आधा है।

राजा : ठीक है—हमें स्वीकार है। [हस्ताक्षर करता है]

विरोधीलाल : [आज्ञा-पत्र लेकर] महाराजकी जय हो।

[विरोधीलालका प्रस्थान]

भाषणमन्त्री : दो सहस्र स्वर्ण मुद्राएँ तो बहुत अधिक हैं महाराज।

राजा : हम जानते हैं लेकिन सुरोधीलालके लिए यह हमारी पहली स्वीकृति थी। हम उनकी उपयोगिता देख रहे हैं

वह भीड़के सामने गम्भीरतासे भाषण दे रहा है। वह कह रहा है कि भूखसे मरनेवाले समाचार ग़लत हैं।

राजा [सोचनेका उपक्रम] इस मामलेरामको अचानक यह क्या हो गया

महामन्त्री यह अचानक नहीं हुआ है महाराज। मामलेराम तो सम्पादक और [illegible] बन गये हैं।

राजा क्या मतलब

महामन्त्री यह म [illegible] आन्दोलनका प्रमुख विशेष है।

राजा [गम्भीरतासे] इसका तो इरादा अब यह है कि भीड़का हमें दमन करना होगा।

महामन्त्री और [illegible] उसके बारेमें क्या सोचा है

रक्षामन्त्री हाँ महाराज! इस समस्याका समाधान होना आवश्यक है।

राजा समस्याओंसे आप लोग इतना आतंकित क्यों हैं? क्या हमने नहीं कहा था समस्याएँ स्वयं अपना समाधान होती हैं। हम शुतुरनगरीके महाराज इसी क्षण एक जाँच समितिके निर्माणकी घोषणा करते हैं। इस समितिकी अध्यक्षा स्वयं महारानीजी होंगी। वे एक कल्पनात्मक विवरण हमें इस तथाकथित भुखमरीपर देंगी। सज्जनो, आप देखेंगे—हम क्षण मात्रमें इस समस्याका हल कर देंगे। भाग्यमन्त्री—सूचनाएँ। हम स्वयं महारानीजीको आदेश देने जा रहे हैं।

[राजाका प्रस्थान]

भाग्यमन्त्री : भुखमरीकी जाँचके लिए शुतुरनगरीकी महारानीजी नियुक्त कर दी गयी हैं। सचाई मालूम होते ही समस्या हल कर

दी जायेगी। [पृष्ठभूमिमें सूचनाएँ प्रसारित होती हैं, अन्तिम स्वरके साथ भीड़का शोर पुनः उमड़ता है]

रक्षामन्त्री : कितनी विचित्र बात है—हमारे देखते-देखते मामूलीराम महत्त्वपूर्ण हो गया।

भाषणमन्त्री : एक दृष्टिसे तो हो ही गया है।

रक्षामन्त्री : एक दृष्टिसे क्यों ?

भाषणमन्त्री : जन-दृष्टिसे वह महत्त्वपूर्ण है—और राजकीय दृष्टिसे होते-होते रह गया।

रक्षामन्त्री : क्या मतलब ?

भाषणमन्त्री : मतलब यह कि राजकीय दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण होनेके लिए महाराजके साथ एकान्तमें रुकना बहुत आवश्यक है। एक बार विरोधीलाल रुका तो सुबोधीलाल हो गया—इसलिए जब मामूलीरामने महाराजके साथ अधिक समय लगाया तो मुझे युक्तिसे काम लेना पड़ा ?

महामन्त्री : युक्तिसे काम लेना पड़ा ?

भाषणमन्त्री : और क्या ? मैंने सोचा कि महाराज यदि इसी प्रकार विरोधियोंका परिवर्तन सुबोधियोंमें करते रहे तो हम सबका भविष्य अन्धकारमें परन्तु तभी मुझे महाराजका संकेत मिला।

महामन्त्री : महाराजका संकेत मिला ?

भाषणमन्त्री : [मुसकराकर] हाँ, महामन्त्रीजी और उनका संकेत मिलते ही मैंने मामूलीरामके विरुद्ध युद्धकी घोषणा कर दी।

रक्षामन्त्री : आपने ठीक ही किया भाषणमन्त्रीजी। हमारे लिए इससे बड़ा संकट और क्या हो सकता था। उधर महाराजने

अपना रहे हैं । मानुसेनाल मानते इस समस्याका हल [illegible] कर देंगे ।

महामन्त्री — मानुसेनाल—यह समस्याका नाम नहीं राजमन्त्री—यह एक मानसिक भावनाका नाम है । इस भावनाका इलाज [illegible] केवल [illegible] है । हम मानुसेनालको प्रेम करना सीखें और उनकी समस्याओंको दूर करना ।

राजमन्त्री — यदि महाराजको मालूम हो गया कि हम मानुसेनालको प्रेम कर रहे हैं तो अनर्थ हो जायगा ।

महामन्त्री — इसी अनर्थमें अब हमारा कल्याण है ।

न्यायमन्त्री — आज हमारा कल्याण निश्चित हो तब भी सोचना पड़ेगा ।

राजमन्त्री — मैं आपसे सहमत हूँ न्यायमन्त्रीजी ।

महामन्त्री — अब प्रश्न यह है कि मानुसेनालकी सबसे बड़ी समस्या क्या है ?

न्यायमन्त्री — भूख ।

महामन्त्री — नहीं न्यायमन्त्री । महाराज और मानुसेनाल इन दोनोंकी सबसे बड़ी समस्या शुतुरमुर्ग है । यदि किसी प्रकार हम इस शुतुरमुर्गको नष्ट कर दें तो दोनों बच सकते हैं । इस कामसे हम मुर्गीस्तानका सन्तोष भी ले सकते हैं ।

राजमन्त्री — लेकिन अब तो शुतुरमुर्गके उपासनाका समय निकट आ गया है । [मुस्कराकर] मुर्गीस्तानको महाराजने दो लाख मुद्राएं देकर [illegible] उपासना करने [illegible] हैं ।

राजमन्त्री — और मुर्गीस्तान हमारे प्रस्तावका विरोध भी कर सकता है ?

महामन्त्री — विरोध करना मुर्गीस्तानका स्वभाव नहीं राजमन्त्री—

उनकी आवश्यकता है। यदि उसकी आवश्यकताओंकी पूर्ति होती है तो वह निश्चित ही हमारा साथ देगा।

मागधमन्त्री : लेकिन महाराजका क्या होगा? शुतुरमुर्ग छोड़नेकी घोषणासे तो वह स्वयं टूट जायेंगे।

महामन्त्री : इस समय महाराजकी चिन्ता करनेकी आवश्यकता नहीं। देश सर्वोपरि है। मामुन्नीरामको सन्तुष्ट करके ही स्थितियों-पर नियन्त्रण पाया जा सकता है। और मामुन्नीराम तभी सन्तुष्ट हो सकता है जब शुतुरमुर्ग टूटे। मैं राजद्वारपर सुखीयोलालकी प्रतीक्षा करने जा रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि शुतुरमुर्ग छोड़नेवाली बात उसने भी सोची होगी।

मागधमन्त्री : लेकिन वह तो स्वर्णहंसकी स्थापना करने गया है। वह ऐसी बात कैसे सोच सकता है?

महामन्त्री : महान् प्रतिभाएँ सदैव एक-सा सोचती हैं।

[महामन्त्रीका प्रस्थान—दासीका प्रवेश]

दासी : सावधान''' सावधान'''जीव-समितिकी अध्यक्षा शुतुर-नगरीकी कल्याणी—महारानी पधार रही हैं।

[महारानीका मुसकराते हुए प्रवेश—दासी और मन्त्रि-गण सादर झुकते हैं]

रानी : महाराजने आज्ञा दी है कि मैं भूख-समस्यापर एक सुन्दर और सही विवरण लिखकर उन्हें दूँ। इस कार्यमें मुझे आप लोगोंकी सहायता चाहिए।

रक्षामन्त्री : आज्ञा दीजिए महारानी। हम आपके लिए क्या कर सकते हैं?

रानी : [ससंकोच] मैंने तो कभी भूखसे मरता हुआ आदमी देखा नहीं है। अतः मेरी प्रार्थना है कि मुझे एक ऐसा मनुष्य ला दीजिए।

मायामन्त्री : आप आज्ञा दीजिए। महारानी एक क्षण यदि आप कहें तो हम एक सहस्र भूखसे मरते व्यक्ति एकत्र कर दें।

रानी : नहीं, मेरा कार्य केवल एक व्यक्तिसे चल जायेगा। कहीं कोई विवाद न खड़ा हो जाय इसलिए आप दोनों ही इस कार्यको गुप्त रूपसे कर दें।

रक्षामन्त्री : हम स्वयं ही यह कार्य करेंगे महारानी।

रानी : धन्यवाद मायामन्त्रीजी। पर इतना अवश्य देख लीजिएगा कि लाया जानेवाला व्यक्ति भूखसे ही मर रहा हो—उसे कोई और व्याधि या रोग न हो।

मायामन्त्री : हम अच्छी तरह ठोक-बजाकर देख लेंगे महारानी।

[दोनों मन्त्रियोंका नेपथ्यमें प्रस्थान]

रानी : दासी ?

दासी : महारानी।

रानी : क्यों री ? तू इतनी आतंकित क्यों है ?

दासी : [सभय] कुछ नहीं महारानी ! कुछ नहीं।

रानी : तू अपनी स्वामिनीसे झूठ बोलती है—बता न क्या बात है ?

दासी : [विषयान्तर] अतिथियोंको स्वर्णपत्र बाँट आऊँ—महारानी ?

रानी : अभी तो अतिथि भोजन कर ही रहे हैं। यद्यपि निपटकर स्वर्णपत्र बाँटनेका कार्य तो मैं स्वयं करूँगी। सुन, तूने कभी भूखसे मरता हुआ मनुष्य देखा है ?

दासी : [अचकचाकर] जी हाँ महारानी देखा है ?

रानी : [निकट आकर] देखा है ? [प्रसन्नतासे] कहाँ री ? कब ? कैसे ? मुझे बता न ?

दासी : [भरे कण्ठसे] बहुत समय पहलेकी बात है—तब मैं बहुत छोटी थी। मेरे गाँवमें भयंकर अकाल पड़ा था।

रानी : [बाल-सुलभ उत्सुकताके साथ] अच्छा ?

दासी : सारे नदी-पोखर सूख गये।

रानी : फिर क्या हुआ ?

दासी : सारा अन्न समाप्त हो गया।

रानी : अच्छा ?

दासी : हाँ महारानी। लोगोंके शरीरसे माँस विलीन हो गया, भूखकी ज्वालाओंसे उनके पेटमें गड्ढे पड़ गये। बैठनेवाले उठ नहीं पाये, उठनेवाले बैठ नहीं पाये और वे सब जीवित प्रेतोंकी तरह मुरदोंकी नगरीमें पड़े-पड़े मौतकी प्रतीक्षा करते रहे।

रानी : [उत्सुकताकी चरम सीमा] फिर क्या हुआ ?

दासी : और फिर वे मरने लगे।

[रानी दासीको प्रसन्नतासे गले लगाती है]

रानी : तू कितनी भाग्यशालिनी है, तूने यह सब देखा है। मेरी मनःस्थिति तो आज ठीक वैसी ही है जैसे मैं जीवनकी पहली परीक्षा देने जा रही हूँ। तेरा वर्णन तो एकदम सजीव है, इस विवरणको लिखनेमें मेरी सहायता करेगी ?

दासी : नहीं महारानी ?

रानी : क्यों ?

दासी : भूखसे मरनेवाला आदमी मुझसे देखा नहीं जायगा।

रानी : पर तू एक बार तो देख चुकी है।

दासी : तब मैं छोटी थी महारानी। बिलकुल अबोध। लेकिन अब ···अब···मुझसे मरता हुआ मनुष्य नहीं देखा जायगा महारानी : [दासी रुलाईपर नियन्त्रण करके अन्दर भाग

अमात्यमन्त्री [illegible]

राजा [illegible] । [illegible]

[[illegible]]

अमात्यमन्त्री [illegible]

राजा [illegible]

अमात्यमन्त्री हाँ [illegible] । [illegible] हैं। [illegible] ।

रानी [विकलभाव] [illegible] करें।

[रानी वहीं सिंहासनके नीचे बैठ जाती है। दोनों मन्त्री एक कोनेमें [illegible] है। [illegible] हैं] [illegible] के [illegible]

 [illegible]

उधर देखता है।

रानी : [प्रसन्नतासे चीखकर] उसने आँखें खोल दीं—उसने अन्तिम बार आँखें खोल दीं।

[रानी अपनी लेखनी सँभालती है। वृद्ध फिर अचेत हो जाता है]

रानी : [क्रोधित] दुष्ट कहींका।

भाषणमन्त्री : महारानी। मरते हुए व्यक्तिसे मीठे वचन बोलना, शिष्टाचार है।

रानी : [प्रेमसे] ए मरते हुए मनुष्य। तुम सचमुच महान् हो। तुम्हारा जीवन धन्य है कि तुम महाराजके काम आ रहे हो। सोचो तो, तुमपर हम कितना महान् परीक्षण कर रहे हैं। परीक्षणकी सफलता एक बहुत बड़ी समस्याका हल होगी—और इसका श्रेय और सम्मान तुम्हें मिलेगा। लेकिन ऐसा हो सके इसलिए आँखें तो खोलो—

[वृद्ध अपनी आँखें खोलता है]

उठकर बैठो···उठकर बैठो ···।

[वृद्ध उठकर बैठता है]

बोलो····कुछ बोलो····।

[वृद्ध कुछ अस्फुट स्वरोंमें कहता है। उसके शब्द सुनाई नहीं पड़ते। रानी और दोनों मन्त्री कान लगाकर सुनने-की कोशिश करते हैं। रानी तुरन्त कुछ लिखती है]

अब खड़े हो जाओ···शाबाश···हिम्मत करो। [वृद्ध खड़ा हो जाता है, स्थिर, जकड़ा-सा। रानी कुछ लिखती है] अब धीरे-धीरे अपने पैर उठाओ·· चलो ···।

[रानी कुछ दूर जाकर खड़ी हो जाती है।]

भाषणमन्त्री : क्षमा करें महाराज। क्या परिभाषाओंका परिवर्तन समस्या हल कर सकेगा?

रक्षामन्त्री : भाषणमन्त्रीने बड़ा सार्थक सवाल पूछा है महाराज।

राजा : समस्याएँ हल होना भविष्यकी प्रतिक्रियापर निर्भर हैं भाषणमन्त्री। और हमें भविष्यकी चिन्ता नहीं। हमें तो केवल वर्तमान प्रिय है। वर्तमान जो हमारा अपना है। जिसे हम जी रहे हैं। वर्तमान! जिसमें हमारा सोनेका शुतुरमुर्ग बन रहा है और स्वर्णछत्रकी स्थापना हो रही है।

[पृष्ठभूमिमें भीड़का शोर उभरता है—दासीका प्रवेश]

दासी : [भयभीत] महाराजकी जय हो!

राजा : क्या समाचार है दासी?

दासी : द्वारपालने समाचार भेजा है महाराज। राजमहलके सामने खड़ी हुई भीड़ बहुत क्रुद्ध हो गयी है। कोई बड़ा उत्पात होनेकी आशंका है।

[दासीका प्रस्थान]

राजा : रक्षामन्त्री!

रक्षामन्त्री : महाराज!

राजा : स्थितिको नियन्त्रणमें लाया जाय।

[महामन्त्री और विरोधीलालका प्रवेश]

महामन्त्री : स्थितियाँ अब नियन्त्रणके बाहर चली गयी हैं महाराज!

राजा : महामन्त्री—!

महामन्त्री : और अब इन बिगड़ी हुई स्थितियोंको परिभाषा बदलकर भी ठीक नहीं किया जा सकता—महाराज!

राजा : परम सत्यवादी महामन्त्री, आप जीवनभर कटु सत्य कहते रहे और हम उनका आदर करते रहे। अब आज अब

[रानी और दार्शनिक प्रस्थान—राजा एक बार सिरसे सारसरा नजरसे देखता है]

राजा [गम्भीरतासे] तो मनुष्य पेटमें भूख लगनेसे मर रहे हैं।

भाषणमन्त्री आपका अनुमान सही है महाराज।

राजा हूँ तो इसका अर्थ यह है कि भूख एक शारीरिक स्थिति है।

भाषणमन्त्री यह भी सही है महाराज।

राजा और यदि हम किसी प्रकार इस शारीरिक स्थितिको दूर कर सकें तो समस्या हल हो जायेगी।

भाषणमन्त्री बिलकुल समाप्त हो जायेगी।

राजा [गम्भीरतासे] हम सुदूरनगरीके महाराज, यह घोषणा करते हैं कि अब इस क्षणसे हमारे देशमें भूखकी परिभाषा बदल गयी।

भाषणमन्त्री [आश्चर्य] भूखकी परिभाषा बदल गयी?

राजा हाँ भाषणमन्त्री। भूख अब एक शारीरिक स्थिति नहीं बल्कि मनःस्थिति माना जायेगा। पहले भूख शरीर मानता [illegible] है—परन्तु परिभाषा भूख [illegible] और [illegible] हमारी घोषणाके अनुसार [illegible] परिवर्तन [illegible] है। अब [illegible] नगर [illegible] भूखमहामारी [illegible] करें।

[[illegible]]

[illegible]

[illegible] [[illegible]] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[[illegible]]

विरोधीलाल : यह सब कुछ जो हमें इतने त्याग और बलिदानके पश्चात् मिला है मिट्टीमें मिल जायेगा।

रक्षामन्त्री : हमारा सर्वनाश हो जायेगा।

राजा : पर जो सर्वोत्तम है हम वही तो कर रहे हैं, हम और क्या कर सकते हैं?

महामन्त्री : हम शुतुरमुर्ग तोड़ सकते हैं।

राजा : [चीखकर] महामन्त्री !

महामन्त्री : शुतुरनगरीके एकमात्र सत्यवादीकी हैसियतसे मैं जो कहूँगा सच कहूँगा, पूरा सच कहूँगा और सचके सिवा कुछ न कहूँगा। महाराजसे लेकर मामूलीराम तककी यात्रा करनेपर सिर्फ एक निष्कर्ष मेरे हाथ लगा है। आप दोनोंकी समस्या एक है। वही शुतुरमुर्ग। दरअसल हमारे देशमें सिर्फ एक समस्या है। शुतुरमुर्ग। आप सोनेका शुतुरमुर्ग बनवानेपर लगे हैं और मामूलीराम उसे तुड़वानेपर। कोई भी महान् परिवर्तन अब इन दोनों स्थितियोंमें समझौता करनेसे ही सम्भव है। यदि हम स्वयं शुतुरमुर्ग तोड़ दें तो भीड़का खोया हुआ विश्वास हमें फिर मिल सकता है।

राजा : लेकिन हम उसे कैसे तोड़ सकते हैं? आप सब तो जानते ही हैं कि हम उसे तोड़नेकी आज्ञा क्यों नहीं दे सकते। सज्जनो, क्या आप चाहते हैं कि हमारा युग-युगान्तरका स्वप्न जो एक सोनेकी सुन्दर प्रतिमामें ढल चुका है, टूट जाये? क्या हमारे परम सत्यका प्रतीक शुतुरमुर्ग विघटित हो जाये?

महामन्त्री : महाराज! यह भावनाओंमें डूबनेका समय नहीं। हमें ठोस धरातलपर खड़े होकर कुछ निर्णय करने हैं।

[illegible]

महामात्य — [illegible]

राजा — [illegible]

महामात्य — [illegible]

राजा — [illegible]

महामात्य — [illegible]

राजा — [illegible]

महामात्य — [illegible]

राजा — अवश्य [illegible]।

महामात्य — महाराज—अब और अधिक [illegible] आवश्यकता नहीं। [illegible] स्थिति गम्भीर है। हमें कुछ-न-कुछ करना होगा।

महामात्य — यदि हमने कुछ न किया महाराज तो अनर्थ हो जायेगा।

और हम सबको [illegible] कर दिए [illegible]

[राजा चिन्तित हैं]

यदि महाराजको हमारी प्रार्थना स्वीकार नहीं—तो हमें इसके फैसलेका सबसे अन्तिम कार्य करना होगा।

राजा : [चौंककर] क्या [illegible] करेंगे आप ?

[illegible] : हम महाराजको [illegible] सौंपकर चले जाएँगे।

राजा : चले जाएँगे ? कहाँ चले जाएँगे ?

[illegible] : कहीं भी। राज्यसे बाहर, [illegible]।

राजा : सब [illegible] ? क्या सब चले जाएँगे ?

[illegible] : मुझे दुख है महाराज—किन्तु मुझे यहीं [illegible] महाराजकी [illegible] है।

राजा : और सब लोग ?

[[illegible] और [illegible] आगे बढ़ते हैं]

[illegible] : मैं [illegible] महाराज।

[illegible] : और मैं [illegible] हूँ।

राजा : और यदि हम [illegible] तो ?

[illegible] : तो हम नहीं [illegible]।

राजा : सब समझ गये हैं।

[illegible] : [illegible]

हो सके इसलिए, कुछ क्षणोंके लिए हम सभीको जाना होगा। आइए सज्जनो।

[चारों मन्त्री अभिवादन करके बाहर जाते हैं, राजा मुसकराते हुए उन्हें जाता देखता है। तुरन्त पृष्ठभूमिसे भीड़का शोर उभरता है। राजाकी मुखमुद्रा बदल जाती है। वह चिन्तित हो उठता है]

[रानीका प्रवेश]

रानी : [घोषणा] महाराजकी जय हो।

राजा : [उसी ओर देखता हुआ] क्या समाचार है दासी ?

रानी : शुतुरनगरीके महाराजसे मामूलीरामजी मिलने आये हैं।

राजा : [आश्चर्य] महारानी आप ? दासी कहाँ है ?

रानी : वह तो राजमहलसे बाहर चली गयी।

राजा : और दासियाँ ? नौकर ? चाकर ? प्रहरी, द्वारपाल—अंगरक्षक ?

रानी : वे सब भी चले गये हैं ?

राजा : [क्रोधित] कहाँ चले गये हैं ? और क्यों चले गये हैं ?

रानी : यही प्रश्न तो मैं भी पूछना चाहती थी महाराज ? लेकिन किससे पूछूँ ? राजमहलमें आपको और मुझे छोड़कर अब कोई नहीं है।

राजा : कोई नहीं है, राजमहलमें अब कोई नहीं है। कहाँ चले गये ये सब ? कहाँ चले गये ?

रानी : [मुसकराकर] महाराज मैं जो हूँ आपके साथ। आप बिलकुल भयभीत न हों।

राजा : कौन कहता है कि हम भयभीत हैं। हम, शुतुरनगरीके महाराज किसीसे भयभीत नहीं। हमें···हमें···तो केवल प्रतीक्षा है।

[illegible] [illegible] है ? [illegible] ?
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] ।
[illegible] [illegible]
[illegible] [[illegible]] [illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible] है ?
[illegible] [[illegible]] [illegible]
[illegible] [[illegible]] [illegible]
[illegible] [illegible] है [illegible] कि [illegible] है [illegible] है [illegible] है कि [illegible] । [illegible] है कि [illegible] [illegible]—[illegible]—[illegible]—
[[illegible] है]
[illegible] [illegible]—[illegible]—[illegible] है
[illegible] [illegible] है [illegible] । [illegible]
[[illegible] है, [illegible] । [illegible]—[illegible] है]
[illegible] [सेनापति] [illegible] ।
[illegible] : मैं [illegible] ।
[[illegible]

राजा : [भयभीत-सा सिंहासनकी ओर हटता हुआ] तुम···
तुम···अब क्या चाहते हो··· ?
[राजा सिंहासनपर बैठ जाता है]

मामूलीराम : [गम्भीरतासे] महाराज मैं आपसे कुछ कहने आया हूँ।

राजा : तुम···अब और क्या कहना चाहते हो ? हमने तुम्हारी माँग स्वीकार कर ली है। [मुसकराकर] हाँ, मामूलीराम, तुम्हें तो प्रसन्न होना चाहिए। हमने शुतुरमुर्ग तोड़नेकी आज्ञा दे दी है।

मामूलीराम : [साश्चर्य] परन्तु महाराज शुतुरमुर्गको तोड़नेका तो प्रश्न ही नहीं उठता। सोनेका शुतुरमुर्ग तो कभी बना ही नहीं।

राजा : मामूलीराम !

मामूलीराम : सारी शुतुरनगरी जानती है महाराज कि सोनेका शुतुरमुर्ग कभी नहीं बना।

राजा : [स्तम्भित] इतनी बड़ी दुर्घटना हमारे पूर्व ज्ञान और सहमतिके बिना हो गयी ? और हमें इसका पता भी न चला। [पीड़ासे] देशका सारा धन, सारी प्रतिभा, सारा वैभव हमने शुतुरमुर्ग बनवानेमें लगा दिया !

मामूलीराम : और जो शेष था उसे तुड़वानेमें—

राजा : परन्तु हमारे योग्य मन्त्री—!

मामूलीराम : आपके योग्य मन्त्रियोंने आपके साथ बहुत बड़ा छल किया है। महाराज, आपका सोनेका शुतुरमुर्ग सिर्फ काग़ज़पर बना होगा—और काग़ज़पर ही टूट गया। [कटुता] लेकिन असली शुतुरमुर्ग तो आप हैं, जो हमें खाकर और हमें पीकर अपने-आपको बनाये रहे।

'महाराजकी जय हो' के नारे लगते हैं। चारों मन्त्री सिंहासनके पास जाकर अभिवादन करते हैं।]

महामन्त्री : [उसके हाथमें रेशमी कपड़ेसे ढँका हुआ एक थाल है] महाराजकी जय हो! अपने शुभ जन्मोत्सवपर हम स्वामिभक्त मन्त्रियोंका यह तुच्छ उपहार स्वीकार करें।

[राजा मुसकराता हुआ सिंहासनके पीछेसे निकल आता है। और रेशमी कपड़ा हटाता है]

राजा : [थालसे रस्सी उठाकर भयभीत-सा] यह—यह—क्या है?

महामन्त्री : [सदैवकी भाँति गम्भीर ओजपूर्ण स्वर] नागपाश।

राजा : नागपाश? क्यों? किसके लिए?

महामन्त्री : यह आपके लिए है महाराज। आपकी मानसिक अवस्था देखकर हम यह तुच्छ उपहार लाये हैं। आपकी आज्ञा लेकर हम आपको इसी नागपाशसे बाँध देंगे।

राजा : पर हम इसकी आज्ञा नहीं दे सकते।

महामन्त्री : तो हमें अपनी इच्छासे यह करना होगा। देश और आपके प्रति हमारी जिम्मेदारी है। आपके असभ्य व्यवहारसे आपकी प्रतिष्ठा गिर सकती है। राजाको सदैव राजाकी तरह व्यवहार करना होगा। इसलिए आपकी मानसिक अवस्था देखते हुए हम आपको बाँधना चाहेंगे।

राजा : पर क्यों? हम तो स्वस्थ हैं। बिलकुल स्वस्थ।

महामन्त्री : हम आपको विश्वास दिलाते हैं महाराज कि आप स्वस्थ नहीं हैं। शुतुरमुर्ग टूटनेसे आपकी मानसिक दशा शोचनीय हो गयी है।

राजा : परन्तु शुतुरमुर्ग तो कभी बना ही नहीं; उसके टूटनेका प्रश्न ही नहीं उठता।

महामन्त्री : हाँ, मैं, परम सत्यवादी महामन्त्री—इस सिंहासनपर बैठूँगा क्योंकि सत्य बोलना मेरे जीवनका धर्म नहीं मेरी कूटनीतिका अंग है। जब मैं सत्य बोलता था तो आप आतंकित होते थे और मुझे अधिक स्वर्णमुद्राएँ देते थे।

राजा : हो—तो यह तुम्हारा मन्त्री चेहरा था। अब हम तुम्हारे असली चेहरे पहचान सकते हैं। [चीखकर] तुम सबके। तुम सब पापी हो—झूठे हो—नीच हो, सारा देश तुम्हें पहचान ले, इसलिए हम तुम्हें आज्ञा देते हैं कि तुम महादुष्टोंका मुखौटा पहनकर हमारे सामने आओ [चीखकर] आओ।

महामन्त्री : हमें कहीं जानेकी आवश्यकता नहीं है महाराज। हम जानते थे कि एक क्षण ऐसा आयेगा कि जब आप हमारे असली मुखौटे देखना चाहेंगे। हम इस अवसरके लिए तैयार होकर आये हैं। ताकि आपकी अन्तिम इच्छा पूरी हो सके।

राजा : अन्तिम इच्छा ? क्या…क्या…तुम हमारी हत्या करोगे ?

महामन्त्री : नहीं महाराज। रक्तपातसे हमें घृणा है। हमने तो यह सुना था कि महान् व्यक्तियोंका जन्म और मृत्यु एक ही दिन होता है। सज्जनो, महाराजको कृतार्थ कीजिए।

[चारों मन्त्री एक कोनेमें जाकर भयंकर आकृतियोंवाले मुखौटे पहनते हैं। फिर महाराजको एक साथ झुककर अभिवादन करते हैं]

राजा : [विक्षिप्तताका आभास] हाँ…अब ठीक है। इन भयंकर मुखौटोंमें तुम लोग कितने सुन्दर लग रहे हो। आह ! ऐसा लगता है कि कुरूप सत्य चार भागोंमें विभाजित होकर हमारे सामने खड़ा है।